Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

पाठ्यक्रम में अन्तर्निहित मूल्यों की समीक्षा

विजय राज त्रिवेदी* डॉ. कृष्ण कान्त शर्मा **

*** शोध छात्र, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा एवं सहायक आचार्य, भगवती शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी (राज.) भारत**
**** प्राचार्य, भगवती शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी (राज.) भारत**

प्रस्तावना – नैतिकता एक शाश्वत मूल्य है इसकी उपेक्षा हर युग में रही है। कहा भी गया है कि स्वास्थ्य खराब होने पर थोड़ा नुकसान, धन का नुकसान भी बड़ा नुकसान लेकिन चरित्र का पतन राष्ट्र और समाज का पतन है। जिस युग में धर्म और नीति के पाँव लड़खड़ाने लगे हो साम्प्रदायिकता, धार्मिक सहिष्णुता, जातिवाद, आतंकवाद, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार आदि बीमारियाँ सरि उठाये खड़ी हैं। उस समय नैतिकता की आवाज को बुलन्द करना और अधिक आवश्यक होता है। राष्ट्र को चाहिए त्यागी और समाज सेवी लोगा। अत: प्रत्येक व्यक्ति को आत्मविश्वासी बनाना होगा। अपने पुरूषार्थ से अपनी आतंरिक आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करना होगा। आज के युवा समाज का निर्माण संस्कार की कसौटी पर बनता हैं। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि व्यक्ति समाज और अंतत: पूरे विश्व को उन्नत करने के लिए विद्यार्थियों में नैतिकता या चारित्रिक दृढ़ता का होना अत्यन्त आवश्यक है। नैतिक मूल्यों के विकास के लिए घर, विद्यालय तथा पाठ्यचर्या के माध्यम से सतत् प्रयास करने होगें। सिर्फ उपदेश देकर नैतिकता या चारित्रिकता का पाठ तो पढ़ाया जा सकता है लेकिन उसे विद्यार्थियों के आचरण में नहीं उतारा जा सकता। नैतिक मूल्यों को आचरण में उतारने के लिए आवश्यक है कि परिवार के सदस्य और अध्यापक अपने व्यक्तित्व के माध्यम से वांछित गुणों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सन्निहित कराये।

इन्हीं सब करणों की दृष्टिगत रखते हुए ने यह आवश्यकता महसूस की कि क्या राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में जो विषय पढ़ाये जा रहे हैं उनकी विषय वस्तु के माध्यम से बालकों को वांछित गुणों का विकास हो रहा है? दूसरी ओर यह भी आवश्यकता महसूस की गई कि क्या उस विषय-वस्तु को पढ़ाते समय शिक्षक उस मूल्य विशेष को अपने विद्यार्थियों में सम्प्रेषित करने हेतु तत्पर हैं या नहीं? ताकि मूल्य हीनता की स्थिति से उबरने हेतु विद्यालयों और पाठ्यक्रम की भूमिका पर दिन-प्रतिदिन जो प्रश्न चिन्ह खडे हो रहे हैं उन पर विराम लगाया जा सके।

प्रत्येक राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति में निहित मूल्य होते हैं। पाठ्यक्रम के माध्यम से भारतीय संस्कृति में निहित मूल्य विद्यार्थियों में स्थापित हो सकते हैं तथा युवा पीढ़ी का मूल्यों से परिचय करवाया जा सकता है।

मूल्य का अर्थ– मूल्य वे उच्च स्तरीय मानदण्ड हैं जिनके आधार पर सामाजिक परिस्थितियों का मूल्यांकन किया जाता है। 'मूल्य' शब्द किसी भी क्रिया या भावना के साथ जुड़ने पर उसकी उपायेदता का आभास कराता हैं।

मूल्यों का स्त्रोत– मूल्यों के स्त्रोत के अन्तर्गत धर्म, दर्शन, साहित्य, सामाजिक, रीति-रिवाज, विज्ञान आदि हैं।

मूल्यों का वर्गीकरण– राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तावित तिरासी नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों का परिगणन किया गया है। इस सन्दर्भ में संपादक श्री बी.आर. गोयल का कहना है कि, इन मूल्यों का निर्धारण विविध शैक्षणिक आयोगों तथा समितियों के प्रतिवेदनों तथा गांधी-साहित्य के अध्ययन के आधार पर किया गया है। जिसका विवरण निम्नलिखित हैं-

(1) ब्रह्मचर्य (2) दूसरों के सांस्कृतिक मूल्यों को पंसद करना (3) अस्पृश्यता का बहिष्कार करना (4) नागरिकता (5) दूसरों के प्रति सहानुभूति (6) दूसरों से सरोकार रखना (7) सहयोग (8) स्वच्छता (9) करूणा (10) परोपकार (11) सबकी भलाई (12) साहस (13) सौजन्य (14) जिज्ञासा (15) प्रजातांत्रिक निर्णय लेना (16) भक्ति-भावना (17) व्यक्ति की गरिमा का आदर करना (18) शारीरिक श्रम की गरिमा का आदर करना (19) कर्त्तव्य-भावना (20) अनुशासन (21) सहिष्णुता (22) समानता (23) मित्रता (24) विश्वसनीयता (25) भाईचारा (26) स्वाधीनता (27) सरलता (28) अच्छा तौर-तरीका (29) सज्जनता (30) कृतज्ञता (31) ईमानदारी (32) दूसरों की सहायता करना (33) मानवीय दृष्टिकोण (34) स्वस्थ-वृत्त (35) स्वयंप्रेरित होकर कार्य करना (36) आत्मनिष्ठा (37) न्याय (38) दयालुता (39) जानवरों के प्रति दयाभाव (40) कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा (41) नेतृत्व (42) राष्ट्रीय एकता (43) राष्ट्रीय जागृति (44) अहिंसा (45) राष्ट्रीय एकात्मकता (46) आज्ञापालन (47) शांति (48) समय का सदुपयोग (49) समय शीलता (50) देशभक्ति (51) शुद्धता (52) ज्ञान के प्रति जिज्ञासा (53) साधन सम्पन्नता (54) नियमितता (55) दूसरों के प्रति सम्मान (56) वृद्धों के प्रति श्रद्धा (57) निष्ठा (58) सादा जीवन (59) सामाजिक न्याय (60) आत्मानुशासन (61) स्वावलंबन (62) आत्मसम्मान (63) आत्म विश्वास (64) आत्मोपजीवन (65) स्वाध्याय (66) आत्मनिर्भरता (67) आत्मसरंक्षण (68) समाज-सेवा (69) मानवमात्र की एकता (70) सद्सदविवेक (71) सामाजिक उत्तारदायित्व (72) समाजवाद (73) सहानुभूति (74) धर्मनिरपेक्षता एवं सर्वधर्म सम्भव (75) अन्वेषण-वृत्ति (76) सामूहिक कार्य में निष्ठा (77) समूह-वृत्ति (78) सत्यता (79) सहनशीलता (80) सार्वजनीन सत्य (81) विश्व-बन्धुत्तव (82) सामाजिक कार्यों में निष्ठा (83) राष्ट्र एवं सार्वजनिक

यह मूल्य आठ श्रेणी में विभक्त हैं, इसका विवरण इस प्रकार है:

1. शैक्षणिक मूल्य– शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन–अध्यापन, अनुशासन, नियम पालन आदि मूल्य शैक्षिक मूल्य कहलाते हैं।

2. नैतिक मूल्य– ईमानदारी, त्याग, निष्ठा, उत्तारदायित्व की भावना, करूणा, दया आदि नैतिक मूल्य कहलाते हैं।

3. सामाजिक राजनीतिक मूल्य– इनके अन्तर्गत राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय भावना जैसे मूल्य समाहित होते हैं। सामाजिक दायित्व, आदर्श नागरिकता, प्रजातंत्र और मानववाद आदि मूल्य समाज एवं राजनीति दोनों का स्पर्श करते हैं।

4. विज्ञान परक मूल्य– वस्तुनिष्ठता, तर्कप्रवणता, तथ्यपरकता एवं गवेषणात्मक दृष्टिकोण इस मूल्य में प्रमुख घटक हैं।

5. वैश्विक मूल्य– किसी जाति, समूह या देश विदेश से संबंध न होकर जिन मूल्यों का सरोकार संपूर्ण विश्व की प्रगति एवं भलाई से होता है, वे मूल्य वैश्विक मूल्य कहलाते हैं। इसमें सबके लिए स्वतंत्रता, न्याय एवं अवसर की समानता, नि:शस्त्रीकरण, सभी प्रकार की दासताओं का उन्मूलन, रंग भेद जैसी घिनौनी व्यवस्था का बहिष्कार, कठोर शारीरिक यंत्रणाओं एवं मृत्युदण्ड जैसी घातक व्यवस्थाओं का निषेध एवं उन्मूलन आदि मूल्यों का समावेश किया जा सकता है।

6. पर्यावरण संबंधी मूल्य– आजकल विश्व के सभी राष्ट्रों के सामने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एक प्रमुख समस्या है। प्रदूषण के कारणों की जाँच एवं उसके निवारण के उपाय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे हैं। वनीय क्षेत्र में नये–नये प्रयोग किये जा रहे हैं ताकि, वनसंपदा सुरक्षित रहे और वनों का निरंतर संवर्धन हो सके। साथ–साथ उस पर निर्भर वन्यप्राणी व अन्य जीव भी संवर्धित हो सके। अत: पेड़–पौधों के प्रति सरोकार, पर्यावरण की शुद्धि के प्रति जागरूकता, वृक्षारोपण एवं वृक्षरक्षण आदि मूल्यों तथा जीवदया को हम इस श्रेणी में रख सकते हैं।

7. सांस्कृतिक मूल्य– सांस्कृतिक मूल्यों में उन सभी मूल्यों का समावेश होता है जो कि, हमारी सांस्कृतिक धरोहर को अखंड रखने एवं उसके विकास के द्वारा राष्ट्र में सांस्कृतिक एकता का वातावरण बनाये रखने में सहायक होते हैं। समूहों की संस्कृति भिन्न हो सकती है, किन्तु उसमें यदि एक–दूसरे की संस्कृति के प्रति सहिष्णुता एवं आदर का भाव होगा तो उन समूहों में एकता एवं सद्भाव बना रहेगा। सांस्कृतिक मूल्यों के अन्तर्गत सहिष्णुता, दूसरों के धर्म तथा सम्प्रदाय के प्रति आदर की भावना आदि मूल्यों का समावेश होता है।

8. अन्य प्रकार– उपयुक्त मूल्यों के अतिरिक्त स्वास्थ्य एवं मनोविनोद संबंधित मूल्य, सौन्दर्यबोध संबंधित मूल्य, धार्मिक मूल्य आदि नाम गिनाये जा सकते हैं। कुछ मूल्य विधेयात्मक होते हैं तो कुछ निषेधात्मक।

विद्यार्थियों में मूल्य विकास के संदर्भ में विभिन्न घटकों के लिए निम्नानुसार सुझाव दिये जा रहे हैं:–

1. पाठ्यचर्या में विषयवस्तु के चयन में विभिन्न मूल्यों का विकास हो ऐसी विषयवस्तु को पढ़ाना चाहिए।
2. पाठ्यचर्या में मानवीय मूल्यों पर आधारित विषयवस्तुओं में प्रवृत्तिलक्षी एवं विद्यार्थियों द्वारा खुद अनुकरण में लाया जाये, ऐसी प्रवृत्तियों का समावेश मूल्यों के विकास के संदर्भ में करना चाहिए।
3. राष्ट्रीय एवं विविध धार्मिक त्योहारों के अवसर पर बालमेलों का आयोजन करना चाहिए।
4. विभिन्न क्षेत्रों में बहुप्रतिभावान व्यक्तियों के प्रवचन विद्यालयीन स्तर पर हो ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।
5. प्रार्थना सभा में तथा अन्य विद्यालयीन दिनचर्या दरमियान पाठ्यचर्या के साथ–साथ कक्षा के अनुसार शिक्षक द्वारा मूल्यों का परीक्षण प्रवृत्ति या विद्यार्थियों को पता न चले ऐसे बिना कोई दबाव में करना चाहिए।
6. माता–पिता व घर के अन्य पुख्त सदस्य ऐसा वर्तन घर के वातावरण में न हो, जिसका असर विद्यार्थी के बाल मस्तिष्क पर पड़े, इसलिए घर में भावात्मक वातावरण का विकास हो ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।
7. स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। इस संदर्भ मे बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए अभिभावकों द्वारा सनिष्ट प्रयास होने चाहिए।
8. मूल्यों का विकास हो ऐसी किताबें घर में रखनी चाहिए।
9. घर में, विद्यालय में एवं विविध जगह स्थानों पर तथा संग्रहालयों में सभी धर्मो के संस्थापकों के चित्र लगाने चाहिए।
10. पुस्तकालयों में धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के विकास में वृद्धि कर सके ऐसे व्यक्तित्व विकास लक्षी पुस्तकों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए।
11. कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक द्वारा विविध उदाहरणों में मूल्य विकास लक्षी बातों का जिक्र होना चाहिए।
12. प्रामाणिक एवं सराहनीय प्रवृत्ति में आगे रहने वाले विद्यार्थियों का सम्मान विद्यालय एवं समाज में खास प्रसंगो या अवसरों पर होना चाहिए।
13. कक्षा दरमियान एवं विद्यालय में शिक्षक एक आदर्श मिसाल की तरह बने ऐसा शिक्षक का बर्ताव एवं स्वभाव होना चाहिए।
14. समाज के आधारभूत संचार साधनों द्वारा मूल्य लक्ष्य विकास के संदर्भ में विविध भूमिका के आधार पर कार्य होने चाहिए।
15. सिनेमा एवं पटचित्रों द्वारा मूल्य विकास का एक सशक्त वातावरण पैदा किया जा सके ऐसे चलचित्र एवं डोक्यूमेंटरी फिल्म बननी चाहिए।
16. प्रार्थना सभा में विविध धर्मों की प्रार्थना हो एवं विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन संदेश को विद्यार्थियों के समक्ष संक्षिप्त में कहना चाहिए।
17. विद्यार्थी खुद अपने जीवन में मूल्यों के आचरण के लिए विविध व्यक्तित्व विकास लक्षी प्रवृत्तियों एवं क्रियाओं में सहभागी होना चाहिए।
18. शिक्षकों को कक्षा में तथा विद्यालय में सभी विद्यार्थियों के प्रति समान भाव ररखना चाहिए ताकि, विद्यार्थियों में स्वस्थ मानवीय गुणों का विकास हो।
19. विद्यार्थियों में निहित विविध गुणों की पहचान करके शिक्षकों द्वारा उन गुणों के आधार पर विद्यार्थियों को कक्षानुसार कार्य सौंपने चाहिए।
20. पाठ्यचर्या में समाविष्ट विषयवस्तु क्लिष्ट न हो, परंतु विद्यार्थियों को विचार करने को प्रेरणा दे, ऐसी विषयवस्तु को सम्मिलित करना चाहिए।
21. विद्यालय द्वारा विज्ञान मेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं अन्य विविधलक्षी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलना चाहिए।
22. विद्यालय द्वारा शैक्षिक पर्यटन एवं प्रवास यात्रा का आयोजन होना चाहिए।
23. विद्यालय की स्वच्छता कायम रखने में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा सनिष्ट प्रयत्न करने चाहिए।
24. विद्यार्थी स्वयं अपनी रूचि के अनुसार कार्य करें, ऐसी प्रवृत्ति के लिए

शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

25. विद्यार्थी को स्वयं अपनी स्वच्छता एवं वर्तन विषयक बातों पर ध्यान रखना चाहिए।
26. नियम के आधीन रखकर विद्यार्थियों को कार्य करवाने की बजाय, उनको विश्वास में लेकर स्नेहपूर्ण एवं सद्भाव से कार्य लेना चाहिए।
27. जीवन के प्रति सकारात्मक अधिगम विकसित हो ऐसी बातें शिक्षक द्वारा होनी चाहिए।
28. परिवार में अच्छे संस्कारों के वातावरण की व्यवस्था ख़ड़ी करनी चाहिए।
29. परिवार में स्नेह तथा वांछित समायोजन के अभाव में माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद की कमी को पूर्ण करके स्वस्थ व्यवहारपूर्ण वातावरण खड़ा करना चाहिए।
30. परिवार में बालक के सद्व्यवहार के लिए पुरस्कार, समादर तथा यथा स्थान महत्त्व देना चाहिए।
31. परिवार में बालक के चारित्रिक विकास के लिए शारीरिक, मानसिक दण्ड या दमन विहीन वातावरण की रचना करनी चाहिए।
32. अपने बालकों के स्वस्थ चारित्रिक विकास के लिए पालकों को भी अपने चरित्र विकास पर ध्यान देना चाहिए।
33. विद्यालय के अधिकारियों एवं शिक्षकों को यह करना चाहिए कि, समय-समय पर और नियमित रूप से विद्यार्थियों की प्रगति और आचरण संबंधी प्रतिवेदन से अभिभावकों को भलीभाँति अवगत रखा जाए एवं विद्यार्थियों के निरंतर विकास हेतु पालकों की हर संभव सहायता की जाए।
34. सभी विद्यालयों में 'शिक्षक-पालक-संघ' सुचारू रूप से चलना चाहिए।
35. विद्यालय के प्रधानाचार्य को अपने चरित्र एवं व्यवहार को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए कि, छात्र-जगत एवं समाज दोनों ही उससे प्रेरणा ग्रहण करें और बदले में उसे उचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान करें।
36. समाज के लोग स्वयं आगे आकर विद्यालय का कुशल-क्षेम पूछें, हर प्रकार की सहायता करने के लिए तत्पर रहें।
37. शिक्षक हमेशा उचित जीवन-दर्शन एवं आदर्शों के अभाव में दिशाहीन एवं असहाय-सा नहीं हो, बल्कि प्रेरणा का स्रोत होना चाहिए।
38. विद्यालयी वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण में हो सके तब तक समरसता होनी चाहिए ताकि बालक का संतुलिक विकास हो।
39. मूल्यपरक शिक्षा के विकास के लिए विद्यालय का वातावरण प्रजातांत्रिक एवं उत्साहवर्धक होना चाहिए।
40. विद्यार्थियों को विद्यालय-विकास के लिए स्वच्छता, अनुशासन, व्यवस्था आदि उत्तरदायित्वपूर्ण सौंपे गये कार्य निष्ठा से करने चाहिए।
41. कक्षा में स्वस्थ वातावरण रचकर शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की मौलिक कल्पना-शक्ति, सृजनात्मक प्रतिभा, चिंतन-मनन-अभिव्यंजन आदि का विकास करना चाहिए।
42. समाज में कार्यरत विविध सेवाभावी संस्थाओं द्वारा व्यक्तियों द्वारा विद्यार्थियों को सेवाकार्य में जुड़कर पीडित व्यक्तियों की व्यथा समझ सकें और विद्यार्थियों में उनके प्रति दया, सहानुभूति, करूणा तथा सरोकार की भावना जाग्रत हो ऐसी प्रवृत्तियों में भागीदार बनाना चाहिए।
43. पाठ्यचर्या के अन्तर्गत विभिन्न भाषाई, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषतएँ हैं, उनको सुदृढ़ बनानी चाहिए।
44. पाठ्यचर्या में विभिन्न सांस्कृतिक, साहसिक, सेवासंबंधी कार्यकलापों के द्वारा प्रजातंत्र में एक अच्छे, योग्य एवं जागरूक नागरिक के लिए विविध क्षमताओं के विकास को विशेष महत्त्व दिया जाना चाहिए।
45. मूल्यपरक शिक्षा के सफल कार्यान्वयन हेतु वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन करके पाठ्यपुस्तकों में विविध नैतिक आदर्श, एवं सांस्कृतिक मूल्य संबंधी अशों को बढ़ाना चाहिए।
46. पाठ्यपुस्तकों में वय-क्रम के अनुसार नैतिक, आदर्श एवं सांस्कृतिक गुणों के सम्पूर्ण स्वरूपों पर व्यापक रूप से प्रकाश डालना आवश्यक है।
47. पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि, पाठ्य का स्वरूप एवं विषयवस्तु विशेष व्यंजनात्मक न हो। इसमें सरल एवं सुग्राहत भाषा-शैली प्रयुक्त की जानी चाहिए।
48. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों में पारस्परिक एवं व्यावहारिक, इन दोनों मूल्यों का समुचित समन्वय करना चाहिए।
49. विद्यार्थी को अपने स्वयं के विकास के लिए सहयोग व पारस्परिक सद्भाव, निष्ठा एवं ईमानदारी, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व आदि जीवन-मूल्यों को आत्मसात् करना चाहिए।
50. शिक्षक द्वारा या अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों में या अपने बालक में सभी धर्मों एवं विश्वासों के प्रति समादर की भावना जागृत एवं विकसित करने के लिए उन्हें विविध धर्मों के उपदेशों तथा शिक्षाओं से अवगत कराया जाना चाहिए।
51. विद्यार्थी को स्वयं के कर्त्तव्यों तथा अधिकारों के अवबोध के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों के प्रति समादर की भावना के विकास के अनुसार कार्य करने की प्रेरणा और समाज सेवा आदि की भावना को विकसित करना चाहिए।
52. मूल्यों के आभ्यन्तरीकरण की दृष्टि से स्काउटिंग-गाइडिंग, राष्ट्रीय समाज सेवा जैसा सरल एवं उपयोगी तथा शीघ्र फलदायक क्रिया-कलाप शायद ही कोई हो। अत: इन क्रिया-कलापों को विद्यालय में अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए।
53. शिक्षा आयोग के अनुसार कार्यानुभव को शिक्षा के सभी स्तरों पवर अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। इसके अन्तर्गत समाजोपयोगी उत्पादक कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें श्रम-गरिमा, समाज-सेवा, समूह-भावना, सहयोग, दूसरों के प्रति सरोकार, कार्यनिष्ठा आदि अनेक नैतिक एवं सामाजिक मूल्य गुम्फित है।
54. विद्यार्थियों को स्वयं तथा शिक्षकों द्वारा विविध कलाओं के प्रति अभिरूचि बढ़ानी चाहिए।
55. यौन-शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में विविध नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता हैं। इसमें शिक्षकों के समान ही माता-पिता व अन्य परिवार के बड़े सदस्यों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होनी चाहिए।
56. प्रत्येक विद्यालय में वाचन-कक्ष तथा अन्य भौतिक सुविधाएँ उचित मात्रा में उपलब्ध कराई जाये तथा पुस्तकालय को अधिक उपयोगी बनाने के लिए अभिभावकों का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जाना चाहिए।
57. पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की सामग्री समाविष्ट हो जिससे छात्रों से सत्यपालन, सदाचार, प्रेम, शांति, अहिंसा आदि मानव-मूल्यों का बीजारोपण व विकास सरलतापूर्वक हो सके।
58. मूल्यपरक शिक्षा की संकल्पना से शिक्षकों को अवगत कराने एवं इस

ओर उनकी रूचि जागृत करने के लिए शिक्षक–प्रशिक्षण का व्यापक कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. कामायनी, कामिनी (2008) : भारतीय जीवन मूल्य, दिल्ली, ज्ञानगंगा
2. सरीन एवं सरीन, शशि कला, अंजलि (2008) : शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृष्ठ संख्या 57–58
3. शर्मा, आर.ए. (2005) : शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर.एल.बुक डिपो, पृष्ठ संख्या–100
4. गुप्त. एन.एल. (2002) : ह्यूमन वैल्यूज इन एजूकेशन न्यू देहली कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी
5. पांडे, गोविंदचन्द्र (1973) : मूल्य मीमांसा, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
6. अग्रवाल, जे.सी. (2006) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाश. कॉल,
7. लोकेश (2002) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नोएडा (यू पी.), एस.बी. ननगिआ, एपीएच पब्लिशिगं कार्पोनेशन
8. अग्निहोत्री, प्रभुदयाल : शिक्षा की भारतीय परम्परा आदर्श और प्रयोग एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली–2002
9. अग्रवाल, जे. पी., जाट, माधवलाल, शर्मा, भरत और रिबेरी, रैपिड रीडर, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर 2005
10. ओड, लक्ष्मीलाल के; शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1990
11. शर्मा, आर.एन. (1979) : शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
12. माथुर, एस.एस. (2007) : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
13. करलिंगर, एफ.एन. : फाउन्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च,सुरजीत पब्लिकेशन, दिल्ली।
14. बायती, जमनालाल, समाज में बालक, पुनित प्रकाशन, जयपुर 2004
16. भारद्धाज, सतीश एवं शर्मा मधुरिमा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर, 2005
17. गाँधी, के.एस., वैल्यू एजुकेशन ए स्टडी ऑफ पब्लिक ओपिनियन, ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1993

सामयिक:–

1. कालिका, चमोला, मूल्य अर्थ तथा अवधारणा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., अंक–3, अप्रैल 2004.
2. जोशी धनजंय, विद्यालयों में नैतिक मूल्यों का स्वरूप, एन.सी.ई.आर.टी अंक– 2 अप्रैल 2018
3. पंत, निम्मी, विज्ञान द्धारा मूल्यों का शिक्षण, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसी. ई.आर.टी. अंक–4, जुलाई–अक्टूबर, 2017
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2015, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. प्रस मई, 2006.
5. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा परिचर्या दस्तावेज, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., जनवरी, 2009
6. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., दिसम्बर, 2006

****